श्यामबिहारी बिनोद

पं० श्यामबिहारी मिश्र रचित ।

मङ्गलाचरण ।

बरवा छन्द ।

हरो बिघ्न बिनासक श्री गण ईश ।
श्यामबिहारी तुम कहँ नावत शीश ॥१॥

नायिका लक्षण ।

निरखि जासु छवि हिय रसभाव लखाय ।
ताहि नायिका भाषै कबि समुदाय ॥ २ ॥

तस्य भेद ।

एक नायिका को कबि कह त्रै भांति ।
स्वकिया तुलिय परकीया गणिका ख्याति ॥३॥

स्वकिया लक्षण ।

मन बच क्रम पति सेवा और न काज ।
ताहि स्वकीया बरनै सब कबिराज ॥

तस्य भेद ।

त्रै बिधि स्वकियहु भाषैं सुकबि सुजान ।
मुग्धा मध्या प्रौढ़ा रति परधान ॥ ५ ॥

मुग्धा लक्षण ।

नई तरुनई आवै जा तिय अङ्ग ।
मुग्धा ताहि बखानहिं कबि रस रङ्ग ॥ ६ ॥

लक्ष्य भेद ।

कबि जन मुग्धाहूं कहँ त्रै बिधि कीन्ह ।
अज्ञातक अरु ज्ञात नवोढ़ा चीन्ह ॥ ७ ॥

अज्ञात लक्षण ।

निज योबन को आगम जो नहिं जान ।
अज्ञातक तेहि बरनै कबिकुल भान ॥ ८ ॥

ज्ञात लक्षण ।

निज योबन को आगम जाहि लखाय ।
ज्ञात योबना ताकहँ कह कबि राय ॥९॥

नवोढ़ा लक्षण ।

अति भय अरु लज्जा ते रति नहि चाह ।
ताहि नवोढ़ा भाषैं सुकबि सराह ॥१०॥

बिश्रब्धनवोढ़ा लक्षण ।

जो पति की कछु धारै हिय परतीत ।
बिश्रब्धनवोढ़ा कह करि प्रीत ॥११॥

मध्या लक्षण ।

लाज मनोज बराबर जा तिय देह ।
कबि बरनै तेहि मध्या सहित सनेह ॥१२॥

प्रौढ़ा लक्षण ।

पूरन योबनवारी रति परवीन ।
श्यामबिहारी प्रौढ़ा तेहि कबि कीन ॥१३॥

तस्य भेद ।

प्रोढ़ान्तर रति प्रीता एक बखान ।
द्वितिय अनन्दसमोहा कहहिं सुजान ॥१४॥

रतिप्रीता आनन्दसम्मोहा लक्षण ।

लक्ष बिशेषन यामह कबिगन कीन ।
नाम सरिसगुण याकह कहहिं प्रबीन ॥१५॥

धीराअधीरा भेद ।

धीरा और अधीरा धीराधीर ।
मध्या प्रौढ़ा अन्तर कह कबि बीर ॥१६॥

तस्य लक्षण ।

धीरा व्यंग सुनावै अव्यंग अधीर ।
व्यंगाव्यंग सुनावै धीराधीर ॥ १७ ॥

मध्या धीरा लक्षण ।

बचन चतुरताई युत रिस प्रगटाय ।
मध्याधीरा ताकह कह कबिराय ॥१८॥

मध्या अधीरा लक्षण ।

अरु कुबैन कहि अतिरिस प्रगटै जौन ।
मध्यअधीरा सब बिधि जानहु तौन ॥१९॥

मध्या धीरा अधीरा लक्षण ।

अति रोदनयुत अतिरिस प्रगटै जौन ।
मध्या धीर अधीरा जानहु तौन ॥ २० ॥

प्रौढ़ा धीरा लक्षण ।

कछुक कोप अरु चिन्ता देइ देखाई ।
प्रौढ़ा धीरा ताकह कह कबि राई ॥ २१ ॥

प्रौढ़ा अधीरा लक्षण ।

सुमन माल ते मारै पिय को जोय ।
प्रौढ़ अधीरा ताकह कह सब कोय ॥२२॥

प्रौढ़ा धीरा अधीरा लक्षण ।

रति उदास ह्वै डर दिखरावै बाम ।
प्रौढ़ा धीर अधीरा ताकर नाम ॥ २३ ॥

जेष्टा कनिष्टा लक्षण ।

जह नायक सों व्याही बाला होय ।
प्यार अधिक कम जेष्ट कनिष्टा सोय ॥२४॥

परकिया लक्षण ।

पर पुरुषहिसों प्रीति परकिया सोय ।
ऊढ़ा और अनूढ़ा तामें दोय ॥ २५ ॥

ऊढ़ा अनूढ़ा लक्षण ।

निज पति तजि पर चाहै ऊढ़ा बाम ।
अन व्याही नर भजै अनूढ़ा नाम ॥ २६ ॥

गुप्ता लक्षण ।

कियो करति औ करिहैं सुरति छपाय ।
ताहि बखान्यों गुप्ता कबि समुदाय ॥२७॥

बिदग्धा भेद ।

श्यामबिहारी बरनै द्विविधि बिदग्ध ।
बचन विदग्धा औरहु क्रया विदग्ध ॥२८॥

बचन बिदग्धा लक्षण ।

बचन रचन करि साधै जो निज काज ।
बचन बिदग्धा ताकह कह कबिराज ॥२९॥

क्रया बिदग्धा लक्षण ।

करै क्रया सों सब बिधि अपनों काम ।
क्रया विदग्धा ताकर कह कवि नाम ॥३०॥

लक्षिता ल० ।

पिय सों प्रेम सखिनको जाहु लखाय ।
ताहि लक्षिता भाषैं कबि समुदाय ॥ ३१ ॥

कुलटा ल० ।

पुरुष अनेकन चाहै रति हित जोय ।
सो नायिका सबबिधि कुलटाहोय ॥३२॥

मुदिता ल० ।

चितचाही लखि मुदितहोत जो बाम ।
श्यामबिहारी मुदिता ताकर नाम ॥३३॥

अनुसैना भेद ।

तीन भांति अनुसैना कबि गन कीन ।
ताको लक्षण बरवै कहौं नवीन ॥३४॥

प्रथम अनुसैना ल० ।

बिनसति ठौर सहेट दुखित जो होय ।
प्रथमभांति अनुसैना जानो सोय ॥३५॥

द्वितीय अनुसैना ल० ।

होनहार संकेतहि कहँ करु ख्याल ।
द्वितिय भांति अनुसैना सोई बाल ॥३६॥

तृतीय अनुसैना ल० ।

रमन असन संकेतहि कहँ अनुमान ।
ब्यथित सोय अनुसैना तीजी जान ॥३७॥

गनिका लच्छण ।

नृत्य गीत में चातुर धन सों प्रीत ।
श्यामबिहारी जानो गनिका रीत ॥३८॥

अन्य संभोग दुक्खिता लच्छण ।

पिय सों परतियरति सुनि अतिदुख मान ।
अन्य संभोग दुक्खिता ताकह जान ॥३९॥

रूपगर्विता प्रेमगर्विता लच्छण ।

रूप प्रेम लहि जो तिय गर्वित होय ।
रूप गर्विता प्रेम गर्विता सोय ॥ ४० ॥

मानिनी लच्छण ।

पिय कुचाल लखि जो तिय करु दृढ़ कोप ।
ताहि मानिनी भाषैं कबि करि चोप ॥४१॥

प्रोषितपतिका लक्षण।

पिय वियोग दुख व्याकुल बाला होय।
श्यामबिहारी प्रोषित पतिका सोय ॥४२॥

खण्डिता लक्षण।

पिय औरहि तियढिग बसि आवैप्रात।
ताते व्यंग सुनावै खण्डित बात ॥ ४३ ॥

कलहन्तरिता लक्षण।

रिसकरि पियहि खीझावै पुनि पछिताय।
कलहन्तरिता ताकह कह कविराय ॥४४॥

विप्रलब्धा लक्षण।

आय सहेटहि पिय नहिं पावै जोय।
याते व्याकुल बिप्र लब्धिका होय ॥४५॥

उत्कण्ठिता लक्षण।

पिय नहिं आयो छायो काके धाम।
आगम परखै उत्का ताकर नाम ॥४६॥

वासकसज्जा लक्षण।

बास नियम हित साजै अपनो साज।
बासकसज्जा ताकह कह कबि राज ॥४७॥

स्वाधिनपतिका लक्षण।

जाको पति आधीन रहै सब जाम।
स्वाधिनपतिका ताकर कह कबि नाम ॥४८॥

अभिसारिका लक्षण ।

बोलि पठावै कै तिय अपनें जाय ।
अभिसारिका सुताकह कह कबिराय ॥४९॥

प्रवत्स्यत्प्रेयसी लक्षण ।

जान चहत पति यह सुनि व्याकुल होय ।
प्रवत्स्यत्प्रेयसी ताकह कह सब कोय ॥५०॥

उत्तमां, मध्यामां, अधमां ल० ।

अनहित में हित हित हित हित में मान ।
उत्तम मध्यम अधमां क्रम सों जान ॥५१॥

रचना समय ।

उनइस सै उनतालिस अरु बुध बार ।
बिरचेउ श्यामबिहारी मति अनुसार ॥५२॥

—:०—

पण्डित श्यामबिहारी कृत श्यामबिहारीबिनोद
सम्पूर्ण ॥

—:०:—

दोहा—राधा राधारमण पद , करै प्रीति युत ध्यान ।
श्यामबिहारी धन्य सो, सदा तासु कल्यान ॥१॥

पं० श्यामबिहारी के पूर्व पुरुषों का वर्णन।

दोहा।

पण्डित श्रीधर मिश्र के, उपजे पुत्र अनेक।
सकल बालपन में नसे, बचे मलूका एक ॥१॥
तिनको श्रीगुरु की कृपा, पूज्यो सब मन काम।
एक पुत्र पायो सुमति, श्री परसादी नाम ॥२॥
श्री परसादी मिश्र के, नन्दराम भे बाल।
तिनके उपजे चारि सुत, जेठे रामदयाल ॥ ३ ॥
तिनके बेचन मिश्र भे, पितु सम नीतिनिधान।
जङ्गेश्वर तिनके तनय, जगमह परम प्रधान ॥४॥
श्री केदार तिनके तनै, कबित मांझ चित जासु।
श्यामबिहारी मन्दमति, अहै एक सुत तासु ॥५॥

श्यामबिहारी विनय से।

पद।

मोते बहु नाते हरि तोंते ॥
पतित पवित्र करत प्रभू तुम हम पापहि में दिन खोते ॥
दीनदयाल दयासागर हम दीन दुखी अति रोते ॥
सब प्रकार अधिकारी श्यामबिहारी खात क्यों गोते ॥१॥

परज।

भजु मेरो मन नित ही राम राम ॥

अशरन शरन हरन दूषनको सिद्ध करन सब मनको काम॥
श्यामबिहारी भक्त भयहारी अधम उधारी जासु नाम ॥२॥

श्यामबिहारी शतक से ।

दोहा ।

वह कबिता क्या चीज है, वह बनिता क्या चीज़ ।
श्यामबिहारी जो लखे, हियो न उठै पसीज़ ॥ १ ॥

श्यामबिहारी वृत्तान्त से ।

ब्राह्मण कुल में जन्म है, श्यामबिहारी नाम ।
हरशंकरी महाल है, औ ग़ाज़ीपुर ग्राम ॥ १ ॥

श्यामबिहारी सिद्धान्त से, सवैया

सबै भांति से श्यामबिहारी को मैं अरु श्यामबिहारी सबै हमरो ॥ तेहि ते उन्हईं को प्रनाम करौं लखों प्रेम ते सांवरो रूप खरो ॥ सदा श्यामबिहारी जू श्यामबिहारी को नाम उचारत मोद भरो ॥ हमें आपने काम ते काम अहै कुल के कुल नाम धरो तो धरो ॥१॥

नस्वर रूप अहै जग ज्यों तब कौन के हेत हिये पछ-ताय हैं ॥ खाय हैं आनँद सों जो मिली अरु जायहैं वापै जो नेह लगायहैं ॥ श्यामबिहारी को ध्यान हिये धरि श्यामबिहारीन नेक लजायहैं ॥ लै घिसिरायहैं चाहै सबै चहै चार जना मिल कान्ह उठायहैं ॥

श्यामबिहारीकी समस्या पूर्त्ति से।

चिन्ता चिता ते बिशेष बढ़्यो तन प्रान को दाहत है सगरो री॥ अन्न मिलै ना कबौं भर पेट औ टिक्कस में घरबार बिकोरी॥ श्यामबिहारी हिरायो सबै सुख दुक्खहि को सरिता उमड़ोरी॥ धन्य है भारत मेरो प्रभू इतने पै आनन्द हूँ खेलत होरी॥३॥

समस्या पूर्त्ति।

आनन्द रहैं सदा श्यामबिहारी॥

मुदर्रिस रामखिलावन राम रचित।

जौ लों रहैं नभ मैं शुभचन्द सु जौ लों भर्यो रहै सिन्धु मैं बारी॥ जौ लों रहै अहि के महि शीश सु जौ लों रहैं जग माहिं तमारी॥ रामखेलावन राम को नाम जपै जब लों कटै पातक भारी॥ श्यामबिहारी कृपा ते अनन्दित तौ लों रहैं सदा श्यामबिहारी॥४॥ *

* उक्त समस्याकी पूर्त्ति जो कवि जन करैं वह पण्डित श्यामबिहारी के तथा हमारे पास भेज दें—संग्रहकर्त्ता॥

श्यामबिहारीसरोज के सहायक ।

निम्नलिखित महाशयों ने श्यामबिहारी सरोज के हेत पण्डित श्यामबिहारी को ग्रंथ सहायता दियाहै जिसे हम प्रकाश करते हैं बाकी दूसरे ग्रंथ में देखियेगा ॥

१ पं० अयोध्यासिंह उपाध्या आजमगढ़ ... २ ग्रंथ
२ पं० अम्बिकाप्रसाद मिश्र ग़ाज़ीपुर ... २ ग्रंथ
३ बाबू उदितनारायनलाल वकील ग़ाज़ीपुर ... २ ग्रंथ
४ बाबू गुलाबराव बून्दी ... ... १ ग्रंथ
५ बाबू गोपालराम गहमर ... ... १ ग्रंथ
६ बाबू गौरीशङ्करभट्ट सम्पादक भट्टभास्कर कानपुर १ ग्रंथ
७ पंडिता चन्द्रकला बाई बून्दी ... ... ३ ग्रंथ
८ महाराज कुमार श्रीलाल ज्वालाप्रतापसिंह सिहरौली ... ... ५ ग्रंथ
९ पं० ज्वालाप्रसाद मिश्र मुरादाबाद ... २ ग्रंथ
१० पं० नकछेदी तिवारी डोंगराव ... ७ ग्रंथ
११ बाबू बद्रीनारायण उपाध्या सम्पादक आनन्दकादम्बिनी मिर्जापुर ... ३ ग्रंथ
१२ गो० बावनाचार्य्य मिर्जापुर ... ३ ग्रंथ
१३ पं० बिहारीलाल चौबे पटना ... ७ ग्रंथ
१४ पं० मङ्गलदीन उपाध्या राजापुर बांदा ... ३ ग्रंथ
१५ बा० मोहनीलाल गुप्त काशी ... ४ ग्रंथ

१६ पं० राधावल्लभ जी डोमरांव ... ४ ग्रंथ
१७ बाबू शंकरदयाल भट्ट कानपुर ... १ ग्रंथ
१८ बाबू शिवप्रसाद जी दरभङ्गा ... २ ग्रंथ
१९ पं० सीताराम चुनार ... ... ११ ग्रंथ
२० पं० सीताराम उपाध्या जौनपुर ... ६ ग्रंथ

श्यामबिहारी सरोजकी पद्य सूचना* ।

श्री पण्डिता चन्द्रकला बाई बूंदी निवासिन कृत ।

दोहा ।

गाजीपुर में मिश्र हैं श्यामबिहारी लाल ।
ते हजार कबिजनन के खोजत चरित रशाल ॥१॥
तिनके जीवन चरित अरु रचना ग्रंथ प्रमान ।
पिता सहित कबि नाम पुनि जन्म समय परिमान ॥२॥

चौपाई ।

एकसहस्र कबिजनके सारा। आवहिंगे ढिग चरित उदारा॥
तिनकी कबितालखि हितधाना। रचिहैं एकग्रंथ मतिमाना॥

---

* कानपुर बासी श्रीयुत बाबू गौरीशंकर भट्ट सम्पादक भट्टभास्कर के एक लेख का अनुवाद ॥

ताते निजनिज ग्रंथबनाये। लिखितहोय अथवा छपवाये॥
पठवहुपंडितपास रशाला। रहिहहिंकीरतिअचल बिशाला॥
ग्रंथ न भेजसकहु जो कोई। भेजहु निजकबिता रस मोई॥
लिखीजाय सों ग्रंथमझारा। जिहिलखि हर्षित ह्वै जनसारा॥
आये पूरन होत हजारा। कछु कमहै अबलों निर्धारा॥
शीघ्रलिखे ह्वै हैं मनभावा। कियेबिलम्ब रहै पछितावा॥

दोहा ।

चन्द्रकला की आहि यह रचना बिनय उदार ।
श्यामविहारी धन्य हैं पचत सु पर उपकार ॥३॥

रामखिलावनराम मुदर्रिस
म्यूनीसिपल फ्री स्कूल
मियापुरा गाजीपुर